जन्मदिन की जय जय!

श्री गुरुमाई के जन्मदिवस महोत्सव का वृत्तान्त

श्री मुक्तानन्द आश्रम

२३-३० जून, २०१६

भाग २

हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति

भाग्या डेली द्वारा लिखित

मैं बहुत प्रसन्न हुई जब मुझे यह पता चला कि २३ जून को श्री गुरुमाई के साथ सिद्धयोग नामसंकीर्तन सत्संग होगा। पिछले सप्ताह, जब से मैं संगीत विभाग में एक विज़िटिंग सेवाकर्ता के रूप में श्री मुक्तानन्द आश्रम आई हूँ, तब से श्री गुरुमाई के जन्मदिवस मनाने का मेरा उत्साह बढ़ता ही जा रहा है।

मैंने श्री निलय में प्रवेश किया और जाकर संगीत-मण्डली के साथ अपने स्थान पर बैठ गई। हॉल का वातावरण प्रत्याशा से स्पन्दित हो रहा था। वातावरण में जीवन्तता थी, एक रंगबिरंगी चमक थी — देखने में भी और महसूस करने में भी। गुरुमाई जी के आसन के आस-पास का स्थान हल्के नारंगी-गुलाबी रंग के प्रकाश से जगमगा रहा था। आसन के दोनों ओर विविध रंगों के फूलों के बहुत सारे गुलदस्ते सजे हुए थे जो मुझे उस दिन के सूर्योदय का स्मरण करा रहे थे। इनमें गहरे गुलाबी पीओनीज़; पीच, गुलाबी व नारंगी गुलाब और सिन्दूरी ऑर्किड के फूल थे। सत्संग में प्रतिभागी अतिसुन्दर साड़ियों, सूट व सलवार-कमीज़ में सुसज्जित थे, जो इन्द्रधनुष के सभी रंगों को दर्शा रहे थे। बल्कि हमारी आपसी बातचीत में भी कई रंग थे : हम प्रेम से एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे, गुरुमाई जी के साथ नामसंकीर्तन करने के अपने उत्साह को बाँट रहे थे और आतुरता से श्री गुरुमाई के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

फिर वह क्षण आ गया, जिसकी हम सब प्रतीक्षा कर रहे थे — श्री गुरुमाई ने हॉल में प्रवेश किया। एक प्रतिभागी ने उल्लासपूर्वक ज़ोर-से कहा, "सद्गुरुनाथ महाराज की जय!" हम सब भी अपने

श्रीगुरु के लिए किए जा रहे इस जयघोष में शामिल हो गए और सबने तीन बार कहा “सद्गुरुनाथ महाराज की जय!” अन्तिम जयघोष में हमारे स्वर अपने उच्चतम स्तर पर थे। इस जय-जयकार और तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूँज उठा। वातावरण हर्षोन्माद में झूम उठा। आसन पर बैठते हुए श्री गुरुमाई प्रदीप्तता से मुस्कराइ।

सत्संग की सूत्रधार मीरा लॉबे-ज़पिरो ने हम सबकी ओर से श्री गुरुमाई को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ दीं। फिर मीरा हमारी ओर मुड़ीं और उन्होंने बड़ी प्रफुल्लता से कहा, “जन्मदिन की जय जय!” उन्होंने “जय जय” पर अधिक ज़ोर देते हुए, इस वाक्यांश को बड़े ही उल्लास के साथ कहा! और मैंने उसी क्षण प्रत्युत्तर दिया, “जन्मदिन की जय जय!” यह कितनी हर्षोन्मत्त अभिव्यक्ति थी — और सुनने में कितनी मधुर भी — जो बड़े ही स्वाभाविक रूप से कुछ ही समय पहले किए गए हमारे “सद्गुरुनाथ महाराज की जय!” के आनन्दपूर्ण जयघोष के साथ प्रवाहित हो रही थी

मीरा ने हमें बताया कि यह सुन्दर वाक्यांश श्री गुरुमाई के जन्मदिवस महोत्सव का शीर्षक है। उन्होंने बताया कि “जन्मदिन” एक हिन्दी शब्द है और “जय जय” जीत एवं विजय का उद्गार है : “एक महान आत्मा — एक सिद्धगुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द के जन्म की जयजयकार !” जब मीरा ने यह अर्थ बताया तो मुझे लगा, “कितना उचित है यह!” इन शब्दों के साथ हम उस हर्षोल्लास, उस प्रत्याशा को अभिव्यक्त कर सकते हैं, जो इस महोत्सव के आरभ होने के क्षण तक बीते दिनों, घण्टों और मिनटों में बढ़ती ही जा रही थी। इस वाक्यांश ने हमें अपने उस भाव को अभिव्यक्त करने का एक सुस्पष्ट तरीक़ा दे दिया जिसका हम पहले से अनुभव कर रहे थे।

अब, जब हम सभी गुरुमाई जी के जन्मदिवस महोत्सव के इस वाक्यांश का अर्थ एवं महत्त्व समझ चुके थे, तो मीरा ने हमें इसे एक बार फिर दोहराने के लिए आमन्त्रित किया। **“जन्मदिन की जय जय!” इस बार हम सबने और अधिक दृढ़ता व उत्साह के साथ यह जयघोष किया।**

मीरा ने आगे समझाया कि “जय जय!” एक बहुत अर्थपूर्ण विषय का गुणगान करता है।

गुरुमाई जी मुस्कुराईं और उन्होंने कहा, "अरे! तुमने कहा ‘बहुत अर्थपूर्ण’--तो लीलावती स्टुवर्ट को कुछ कहना है।” **मीरा ने मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया से आई विज़िटिंग सेवाकर्ता, लीलावती को आगे आने के लिए आमन्त्रित किया।** लीलावती ने बताया कि जून माह के पूर्णचन्द्र को “स्ट्रॉबेरी चन्द्र”

कहते हैं। इस वर्ष २०१६ में, संयोग से २० जून को उज्ज्वल लालिमा लिए हुए यह पूर्णचन्द्र और ग्रीष्मकालीन संक्रान्ति एक ही दिन थे।

जब मैंने इस असामान्य घटना के बारे में सुना तो मैं सोचने लगी कि, कैसे प्रकृति के पास हर वर्ष, जन्मदिवस आनन्दोत्सव मनाने के लिए अपना ही एक विशिष्ट तरीक़ा होता है! श्री मुक्तानन्द आश्रम के बगीचों में टहलते हुए, मैं इस सप्ताह इसी बात पर मनन कर रही थी। यहाँ प्रकृति वैभवपूर्ण तरीक़े से अपनी प्रचुरता प्रकट कर रही है। पेड़-पौधे हरे-भरे और घने हैं। आप जहाँ भी देखते हैं, वहाँ सभी आकार व रंगों के फूल खिले हुए हैं जैसे गुलाबी, बैंगनी, नीले व नारंगी। तितलियाँ और मधुमक्खियाँ चारों ओर मँडरा रही हैं। सब कुछ चमचमाता व ताज़गी भरा है।

लीलावती द्वारा स्ट्रॉबेरी चन्द्र के बारे में बताए जाने के बाद मीरा ने सत्संग में भाग ले रहे सभी बच्चों व उनके सुन्दर परिवारों का स्वागत किया। **मीरा द्वारा स्वागत किए जाने पर बच्चे खुलकर मुस्कराए।** उनके दमकते चेहरों ने मेरे मन को छू लिया; बच्चों की प्रसन्नता और मधुरता इतनी प्रभावशाली थी कि मैं भी मुस्कराने लगी और मेरे आस-पास के सभी लोग भी मुस्कराने लगे। जब मीरा ने आज सुबह प्रकृति से मिले उपहारों जैसे पक्षियों के कलरव व सूर्योदय के लिए आभार प्रकट करना शुरू किया तो बच्चे भी सुर में सुर मिलाते हुए बताने लगे कि उन्होंने क्या देखा।

फिर मीरा ने एक अन्य महान उपहार के बारे में बताया—वह उपहार जो हमें श्री गुरुमाई से सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर ***सद्गुण वैभव*** के रूप में प्राप्त हुआ है। जन्मदिवस आनन्दोत्सव के दौरान हमें हर दिन एक दिव्य सद्गुण का अध्ययन करने का अवसर मिला है, जिसे श्री गुरुमाई ने हमारे लिए चुना है।

मीरा ने कहा, "आज का सद्गुण है, दृढ़ता, जो कितनी सुन्दरता व स्पष्टता से वर्ष २०१६ के लिए श्री गुरुमाई के सन्देश का स्मरण कराता है :

परमानन्द में
स्थिर होने की दिशा में
दृढ़ता के साथ
आगे बढ़ो

मीरा ने आगे कहा, "मैंने सीखा है कि सद्‌गुण श्री गुरुमाई के सन्देश का अभ्यास करने का एक सटीक तरीक़ा है। सद्‌गुणों को मैं अपना अच्छा मित्र मानती हूँ जिनकी सहायता मैं कभी भी ले सकती हूँ । कभी-कभी मुझे प्रसन्नता जैसे एक विनोदप्रिय मित्र की आवश्यकता होती है, जो मुझे यह याद दिलाए कि जीवन खिल-खिलाकर हँसने के लिए है। कभी-कभी मैं पराक्रम को याद करती हूँ कि वह दृढ़तापूर्वक खड़े रह पाने में मेरी मदद करे। और कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं जब निस्तब्धता मेरा साथ देती है। ये सद्‌गुण सदैव उपस्थित हैं, मेरी पहुँच में हैं। मुझे पता है कि हरेक सद्‌गुण का भण्डार मेरे अन्तर में विद्यमान है। मुझे केवल सद्‌गुणों को याद करना है और उनका अभ्यास करना है। मुझे यह सिखाने के लिए धन्यवाद, गुरुमाई जी। दिव्य सद्‌गुणों का उपहार, *'सद्‌गुण वैभव'* प्रदान करने के लिए आपका धन्यवाद।"

क्रमशः

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।